IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 4.819

Volume 11, Issue 1, November 2019

IkL—frd iutkxj.k I jk"Vh; pruk rd % Jh jkepfjrekuI dh ,frgkfId Hkfedk vkj Iedkyhu çkIfxdrk

Mk- jhrk fIg

vfI0 ikQIj bfrgkI

ifMr jkey[ku “kDy jktdh; ih th dkyt] vkykij] vEcMdjuxj

email- ritasingh806@gmail.com

Ikjk'k ¼Abstract½

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन ग्रंथों ने केवल आध्यात्मिक जीवन को ही दिशा नहीं दी, बल्कि समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। इसी परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित श्री रामचरितमानस भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली ग्रंथ माना जाता है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि रामचरितमानस ने मध्यकालीन भारतीय समाज में सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को किस प्रकार गति प्रदान की तथा इसके माध्यम से भारतीय समाज में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना के विकास को किस प्रकार बल मिला।

मध्यकालीन भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियाँ अनेक प्रकार की चुनौतियों से घिरी हुई थीं। समाज में धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता, राजनीतिक अस्थिरता तथा सांस्कृतिक विचलन जैसी समस्याएँ विद्यमान थीं। ऐसे समय में तुलसीदास ने रामकथा को अवधी जैसी लोकभाषा में प्रस्तुत करके धार्मिक और नैतिक मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। संस्कृत में उपलब्ध धार्मिक साहित्य उस समय मुख्यतः विद्वानों और उच्च वर्ग तक सीमित था, किंतु रामचरितमानस की सरल और भावपूर्ण भाषा ने इसे सामान्य जनमानस के लिए सुलभ बना दिया। परिणामस्वरूप यह ग्रंथ केवल धार्मिक आख्यान न रहकर भारतीय समाज के सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण आधार बन गया और इससे समाज में आस्था, नैतिकता तथा सांस्कृतिक समन्वय की भावना को बल मिला।रामचरितमानस में वर्णित राम का आदर्श चरित्र भारतीय समाज के लिए नैतिक जीवन का एक उच्च आदर्श प्रस्तुत करता है। राम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में चित्रित किया गया है, जिनका जीवन सत्य, धर्म, कर्तव्यनिष्ठा, करुणा और त्याग जैसे मूल्यों का प्रतीक है। इस प्रकार रामचरितमानस ने भारतीय समाज को केवल धार्मिक आस्था ही नहीं दी, बल्कि उसे एक नैतिक और सामाजिक दिशा भी प्रदान की। इसी प्रकार इस ग्रंथ में वर्णित रामराज्य की अवधारणा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें एक ऐसे आदर्श समाज और शासन व्यवस्था की कल्पना प्रस्तुत की गई है जहाँ न्याय, समानता, शांति और लोककल्याण को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। यह अवधारणा भारतीय सामाजिक और राजनीतिक चिंतन में एक आदर्श व्यवस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुई और आज भी सामाजिक एवं राजनीतिक विमर्शों में इसका उल्लेख किया जाता है।